E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 223-225
Received: 23-08-2019
Accepted: 26-09-2019

डॉ0 सोनी
अब्दलपुर रैनी (टी. सी. ए. ढोली), सकरा, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 सोनी
अब्दलपुर रैनी (टी. सी. ए. ढोली), सकरा, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

जनसरोकार के कवि आधुनिक कबीर नागार्जुन

डॉ0 सोनी

सारांश
नागार्जुन सही अर्थो में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि है। एक जनकवि के रूप में नागार्जुन खुद को जनता के प्रति सचेत रूप से जवाबदेह समझते हैं। इसलिए वे साफ ढ़ंग से सच–सच कहते है और सच के सिवा कुछ नहीं कहते है। नागार्जुन की दृष्टि में कोई दुविधा नहीं है। आधुनिक कबीर नागार्जुन– जिसके लिए विचारधारा से अधिक बड़ी थी जनता की संवेदना नागार्जुन ने अपने समय के बड़े–बड़े नेताओं के लिए जिस तरह की तिलमिला देने वाली भाषा और व्यंग्य का प्रयोग किया है, वह हिंदी कविता में दुलर्भ है।

प्रस्तावना
नागार्जुन यानी हिंदी कविता के 'आधुनिक कबीर'। जिस तरह कबीर अपने समय की विसंगतियों पर निशाना अपने अक्खड़–फक्खड़ अंदाज में निशाना साधते थे नागार्जुन भी अपने दौर में वही करते हैं। नागार्जुन हिंदी एक ऐसे हिंदी कवि हैं जिनकी कविता का दायरा या रेंज काफी फैला हुआ है। संस्कृत, बांग्ला, मैथिली और हिंदी कविता की परंपरा का मेल नागार्जुन की कविताओं में देखा जा सकता है। [1] नागार्जुन ने प्रकृति, प्रेम, राजनीति जैसे सभी विषयों पर कविता लिखी है। उन्होंने कटहल, नेवला जैसे विषयों पर भी कविता लिखी, जिन्हें अमूमन कविता का विषय नहीं समझा जाता था।
इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने खास शिल्प और भावबोध की वजह से नागार्जुन की कविताएं आज भी काफी लोकप्रिय हैं। लेकिन नागार्जुन की कविता के साथ सबसे खास बात यह है कि तात्कालिक राजनीतिक घटनाओं पर लिखी गई उनकी कविताएं आज भी ताजी लगती हैं।
तात्कालिक घटनाओं पर कविता लिखने से अक्सर कवि बचते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि घटनाओं के पुराने हो जाने पर कविता की प्रासंगिकता खत्म हो जाती है। लेकिन नागार्जन ऐसा करने का जोखिम उठाते हैं। नागार्जुन साफ–साफ जनता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को घोषित करने वाले कवि थे। वे लिखते हैं–

'जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊं
जनकवि हूं साफ कहूंगा, क्यों हकलाऊं'

इस वजह से नागार्जुन ने कभी भी राजनीतिक घटनाओं पर लिखने से गुरेज नहीं किया। नागार्जन को अपनी कविता प्रासंगिकता बचाने से अधिक जनता और उसके पक्ष की चिंता थी। राजनीतिक खबरों पर कविता लिखने का ऐसा साहस नागार्जुन के बाद सिर्फ रघुवीर सहाय के यहां ही दिखता है।
उन्होंने व्यंग्य को बनाया अपनी कविता की ताकत। अब सवाल यह है कि ऐसी क्या खासियत है नागार्जुन की इन राजनीतिक कविताओं की जो आज भी कई बार मौजूं लगती हैं और पाठकों को आसानी से समझ में आ जाती हैं। दरअसल इन कविताओं में नागार्जुन ने व्यंग्य का इस्तेमाल किया है और यह व्यग्य बहुत ही सरल भाषा में है। सीधी–सीधी भाषा यानी अभिधा में व्यंग्य करना कविता की सबसे बड़ी ताकत होती है। काव्यशास्त्र में यूं ही अभिधा में को कविता की सबसे बड़ी तकात नहीं कहा जाता। कविता में अभिधा की ताकत का एहसास अगर किसी आधुनिक कवि को पढ़कर होता है तो वह नागार्जुन की ही कविता है। [2]
नागार्जुन जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी से लेकर नरसिम्हा राव तक का दौर देखा था। उन्होंने तेभागा, तेलंगाना से लेकर नक्सलबाड़ी और भोजपुर के किसान–मजदूर के आंदोलन का दौर देखा था। उन्होंने संपूर्ण क्रांति का दौर भी देखा और इस क्रांति को बिखरते हुए भी देखा। उन्होंने दलित हत्याओं और दलित–प्रतिरोध का भी दौर देखा था।
नागार्जुन ने अपने दौर के सभी बड़े नेताओं का अपनी कविताओं का जिक्र किया है। जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी को अपनी कविताओं खासतौर से निशाना बनाया है।
आजादी के तुरंत बाद ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ भारत के दौर पर आई थीं। उस वक्त उन्होंने

लिखा था– 'आओ रानी हम ढोएंगे पालकी/यही हुई राय जवाहरलाल की। इसी तरह नेहरू की मौत पर उन्होंने लिखा था– 'तुम रह जाते दस साल और। यह कविता जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व और उनकी राजनीतिक का बहुत ही सटीक मूल्यांकन करती है। नेहरू के बारे में कहा जाता है कि वे हर तरह की विचारधारा से तालमेल स्थापित कर लेने में माहिर थे। नागार्जुन की इस कविता में इसकी एक बानगी देखी जा सकती है–

'गेरूआ पहनते जयप्रकाश, नर्मदा किनारे बस जाते
डांगे हो जाते राज्यपाल, लोहिया जेल मे बल खाते
गेपालन होते नजरबंद, राजाजी माथा घुटवाते
जनसंघी–अटलबिहारी जी भिक्षा की झोली फैलाते'

लेकिन नेहरू के आलोचक रहे इसी नागार्जुन ने आपातकाल लगाने के वक्त इंदिरा गांधी पर नेहरू की विचारधारा और सपने से भटकने का आरोप लगाते हुए कहा–

'इदुजी, इंदुजी क्या आपको?
तार दिया बेटे को, बोर दिया बाप को'

आपातकाल के वक्त नागार्जुन जिस जयप्रकाश की प्रशंसा कर रहे थे उसी जेपी को नागार्जुन ने संपूर्ण क्रांति के असफल होने पर बुरी तरह अपनी कविताओं में फटकारा है। [3]

मायावती और बाल ठाकरे पर भी लिखी थी कविता नागार्जुन नेताओं की विचारधारा की शक्ति और सीमा दोनों से परिचित थे। जब उन्हें किसी नेता या आंदोलन में ताकत और बदलाव की शक्ति दिखती तो वे उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा में नहीं हिचकते थे। भले वो नेता उनकी वामपंथी विचारधारा में फिट नहीं बैठता हो। इसका एक उदाहरण उनकी अंतिम कविता है जो उन्होंने मायावती और कांशीराम पर लिखी थी। यह कविता 10 जुलाई 1997 को लिखी गई थी। यह वह दौर था जब राष्ट्रीय राजनीति में बड़ी तेजी से बहुजन समाजवादी पार्टी का उभार हुआ था। नागार्जुन इस कविता में काशीराम को 'दलितेंद्र'' कहते हैं और मायावती को उनकी 'छायावती' कहकर संबोधित करते हैं–

'जय–जय हे दलितेंद्र
प्रभु, आपके चाल–ढाल से
दशत में है केंद्र
जय–जय हे दलितेंद्र

हो सकता है आज अगर नागार्जुन जिंदा रहते तो मायावती की कई नीतियों की आलोचना करने से भी नहीं हिचकते। नागार्जुन को जनता की आकांक्षाओं से आंदोलन से निकले नेताओं द्वारा मुंह फेर लेना गंवारा नहीं था।

नागार्जुन हिंदुत्ववादी राजनीतिक के कटर विरोधी थे उन्होंने अपने समय के आरएसएस प्रमुख देवरस पर सीधे–सीधे निशाना साधते हुए लिखा था–

देवरस–दानवरस
पी लेगा मानवरस'

इस तरह शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के लिए उन्होंने लिखा था 'बर्बरता की खाल ठाकरें। वामपंथी होते हुए भी वापमंथ पर किया था व्यंग्य नागार्जुन ने व्यंग्य के सहारे अपने समय के बड़े–बड़े नेताओं से सीधी टक्कर ली थी। अपने समय की सत्ता की आलोचना करना और बात है और अपने समय के नेताओं का नाम लेकर और बात। नेताओं का सीधे–सीधे नाम लेकर उनपर करारर व्यंग्य करना सचमुच में साहस का काम है। खासकर नागार्जुन ने जिस तरह की तिलमिला देने वाली भाषा और व्यग्य का प्रयोग किया है, वह हिंदी कविता में दुलर्भ है। [4]

नागार्जुन वामपंथी थे लेकिन जहां उन्हें महसूसू हुआ वे वामपंथ पर व्यंग्य करने में नहीं हिचके। 1962 के चीनी आक्रमण के समय जब भारत की कम्युनिस्ट पार्टी चुप थी, उस वक्त पर नागार्जुन चीनी आक्रमण के विरोध में लिखा– ''पुत्र हूं भारतमाता का, और कुछ नहीं।' इस तरह की और भी कविताएं नागार्जुन ने लिखी।

दरअसल नागार्जुन वामपंथ या किसी आंदोलन को जनता की नजर से देखते थे। इसमें कोई शक नहीं कि नागार्जुन अंतिम वक्त वामपंथी बने रहे लेकिन उन्होंने वामपंथ को किताबों से नहीं शोषित जनता की निगाह से अपनाया था। नागार्जुन के लिए जनता का हित सर्वोपरि था और वे इसके लिए किसी की निंदा या प्रशंसा करने में संकोच नहीं करते थे। [5]

प्रगतिशील धारा के कवियों के बारे में चलते फिरते यह कह दिया जात है कि इन्होंने प्रकृति प्रेम की कविताएं नहीं लिखीं हैं या प्रकृति चित्रण होता इनका साध्य नहीं है। खासकर यह धारणा वैसे कवियों के बारे में है जो राजनीतिक और क्रांति के बारे में अधिक लिखते हैं। नागार्जुन की कई कविताएं इस धारणा को तोड़ने का काम करती हैं। [6] 'कालिदास सच सच बतलाना' या 'बादल को घिरते देखा है' जैसी कविताएं इसका उदाहरण हैं और जब भी हिंदी कविता में प्रकृति प्रेम की कविताओं का जिक्र आएगा तो ये कविताएं स्वाभाविक रूप से इसमें शामिल होंगी, बादल या हिमालय का जब भी जिक्र आता है, हिंदी कविता के प्रेमियों को नागार्जुन को नागार्जुन की ये कविता जरूर याद आती है–

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है,
छोटे–छोटे मोती जैसे
डसके शीतल तुहिन कणों को,
मनसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है,
तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों ले आ–आकर
पावस की उसम से आकुल
तिक्त–मधुर बिसतंतु खोजते
बादल को घिरते देखा है।

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य–परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि–व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना–संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षो से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। [7] उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विषय–वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है। मैथिली, हिन्दी और संस्कृत के अलावा पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती आदि अनेकानेक भाषाओं का ज्ञान भी उनके लिए इसी उदेश्य में सहायक रहा है। उनका गतिशील, सक्रिय और प्रतिबद्ध सुदीर्घ जीवन उनके काव्य में जीवंत रूप से प्रतिध्वनित–प्रतिबिंबित है। नागार्जुन सही अर्थो में भारतीय मिटी से बने आधुनिकता कवि हैं। [8] उन्होंने आजादी के पहले और बाद में भी कई बड़े जनांदोलनों में भाग लिया था। 1939 से 1942 के

बीच बिहार में किसान के एक प्रदर्शन का नेतृत्व करने की वजह से जेल में रहे। आजादी के बाद लम्बे समय तक वो पत्रकारिता से भी जुड़े रहे। [24] जन संघर्ष में अडिग आस्था, जनता से गहराा लगाव और एक न्यायपूर्ण समाज का सपना, ये तीन गुण नागार्जुन के व्यक्तित्व में ही नहीं, उनके साहित्य में भी घुल–मिले हैं। निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने इतने छंद, इतने ढंग, इतनी शैलियां और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल किया है। पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करनेवाले वे आद्वितीय कवि हैं। उनके कुछ काव्य शिल्पों में ताक–झांक करना हमारे लिए मूल्यवान हो सकता हैं। उनकी अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक भी है, बेहद ठेठ और सीधा भी अपनी तिर्यकता में वे जितने बेजोड़ हैं, अपनी वाग्मिता में वे उतने ही विलक्षण हैं। काव्य रूपों को इस्तेमाल करने में उनमें किसी प्रकार की कोई अंतर्बाधा नहीं हैं। उनकी कविता में एक प्रमुख शैली स्वगत में मुक्त बातचीत की शैली है। नागार्जुन की ही कविता से पद उधार लें तो कह सकते हैं–स्वागत शोक में बीज निहित हैं विश्व–व्याथा के। [10] भाषा पर बाबा का गजब अधिकार है। देसी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय पदावली तक उनकी भाषा के अनेकों स्तर हैं। उन्होंने तो हिन्दी के अलावा मैथली, बांग्ला और संस्कृत में अलग से बहुत लिखा है। जैसा पहले भाव–बोध के संदर्भ में कहा गया, वैसे ही भाषा की दृष्टि से भी यह कहा जा सकता है कि बाबा की कविताओं में कबीर से लेकर धूमिल तक की पूरी हिन्दी काव्य–परंपरा एक साथ जीवंत है। बाबा ने छंद से भी परहेज नहीं किया, बल्कि उसका अपनी कविताओं में क्रातिकारी ढंग से इस्तेमाल करके दिखा दिया। बाबा की कविताओं की लोकप्रियता का एक आधार उनके द्वारा किया गया छंदो का सधा हुआ चमत्कारिक प्रयोग भी है। [11] समकालीन प्रमुख हिंदी साहित्यकार उदय प्रकाश के अनुसार ''यह जोर देकर कहने की जरूरत है कि बाबा नागार्जुनद बीसवीं सी की हिंदी कविता के सिर्फ 'भदेस' और मात्र विद्रोह मिजाज के कवि ही नहीं, वे हिंदी जाति के सबसे अद्वितीय मौलिक बौद्धिक कवि थे। वे सिर्फ 'एजिट पोएट' नहीं, पारंपरिक भारतीय काव्य परंपरा के विरल 'अभिजात' और 'एलीट पोएट' भी थे।'' [12] उदय प्रकाश ने बाबा नागार्जुन के व्यक्तित्व–निर्माण एवं कृतित्व की व्यापक महत्ता को एक साथ संकेतित करते हुए एक ही महाकावाक्य में लिखा है कि ''खुद ही विचार करिये, जिस कवि ने बौद्ध दर्शन और मार्क्सवाद का गहन अध्ययन किया हो, राहुल सांकृत्यायन और आनंद कौसल्यायन जैसी प्रचंड मेधाओं का साथी रहा हो, जिसने प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा का ज्ञान पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल करके प्राप्त किया हो, जिस कवि ने हिंदी, मैथली, बंगला और संस्कृत में लगभग एक जैसा वाग्वैदग्ध अर्जित किया हो, अपनी मूल प्रजा ओर संज्ञान में जो तुलसी और कबीर की महान संत परंपरा के निकटस्थ हो, जिस रचनाकार ने 'बलचनमा' और 'वरूण के बेटे' जैसे उपन्यासों के द्वारा हिंदी में आंचलिक उपन्यास लेखन की नींव रखी हो जिसके चलते हिंदी कथा साहित्य को रेणु जैसी ऐतिहासिक प्रतिभा प्राप्त हुई हो, जिस कवि ने अपने आक्रांत निजी जीवन ही नहीं बल्कि अपने समूचे दिक् और काल की, राष्ट्रीय– अंतराष्ट्रीय घटनाक्रमों और व्यक्तित्व पर अपनी निर्भ्रात कलम चलाई हो, (संस्कृत में) बीसवीं सदी के किसी आधुनिक राजनीतिक व्यक्तित्व (लेनिन) पर समूचा खण्डकाव्य रच डाला हो, जिसके हैंडलूम के सस्ते झोले में मेघदूतम् और 'एकॉनमिक पॉलिटिकल वीकली; एक साथ रखे मिलते हों, जिसकी अंग्रजी भी किसी समकालीन हिंदी कवि या आलोचक से बेहतर ही रही हो, जिसने रजनी पाम दत्त, नहरू, बर्तोल्त ब्रेख्ट, निराला, लूशुन से लेकर विनोबा, मोरारजी, जेपी, लोयिा, केन्याता, एलिजाबोध, आइजन हावर आदि पर स्मरणीय और अत्यंत लोकप्रिय कविताएं लिखी हों... बीसवीं सदी की हिंदी कविता का प्रतिनिधि बौद्धिक कवि वह है.... ।'' [13]

संदर्भ

1. शोभाकांत, नागार्जुन– मरे बाबूजी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1990, पृ0 63
2. विजय बहादुर सिंह, नागार्जुन का रचना संसार, संभावना प्रकाशन, हापुड़, संस्करण–1982, पृ0 103
3. नागार्जुन और उनकी युगधारा, जीवन सिंह, अलावा, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक, जनवरी–फरवरी 2011, सं. रामकुमार, कृषक, पृ. 41
4. वहीं पृ0 54
5. जनकविता के मुखर वैतालिक, नचिकेता, अलाव, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक, जनवरी–फरवरी 2011, सं. रामुमार कृषक, पृ.96
6. अपराजेय जनकवि नागार्जुन, रणजीत साहा, आजकल, जनवरी 1999, सं. प्रताप सिंह सिंह बिष्ट. पृ. 89
7. वहीं पृ. 108
8. नागार्जुन–काव्य में व्यंग्य बोध, रमाकांत शर्मा, अलाव, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक, जनवरी–फरवरी 2011, सं. रामुमार कृषक, पृ. 105
9. लोक–सरोकारों के कवि नागार्जुन सृजनशिल्पी। मूल से 28 सितंबर 2007 को पुरालेखित। अभिगमन तिथि 18 दिसंबर 2008
10. ''बाबा नागार्जुन (यात्री जी) कालजयी रचनाकार, विद्रोही कवि'' द दरभंगा एक्सप्रेस। मूल से 20 मई 2018 की पुरालेखित। अभिगमन तिथि 6 फरवरी 2018
11. ''नागार्जुन रचना संचयन'' (पीएचपी) भारतीय साहित्य संग्रह। अभिगमन तिथि 18 दिसंबर 2008
12. ''नागार्जुन के काव्य की भाव–भूमि और भाषा'' (एचटीएमएल) हिन्दी कैफे. अभिगमन तिथि 18 दिसंबर 2008
13. ईश्वर की आंख, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ 207–8